6

स्तुति की दो अभिव्यक्तियां

जब मैं छोटा लड़का था तो कलीसिया की रविवार की सभा सप्ताह की सबसे बड़ी सामाजिक घटना होती थी। अधिकतर सदस्य हर रोज़ सूर्योदय से सूर्यास्त तक खेतों में काम करते थे। उस वक्त हमारे वहां प्राइवेट टेलीफोन बहुत कम होते थे, सो लोगों को इधर-उधर की खबरें आराधना के लिए इकट्ठी होने वाली सभा में ही मिलती थीं। पुरुष आमतौर पर प्रांगण में बड़े पेड़ के नीचे जाकर इकट्ठे हो जाते, स्त्रियां अन्दर चली जातीं और आराधना आरम्भ होने तक अंदर ही रहतीं। आराधना के लिए ठहराया हुआ समय निकट आने पर, सौंग लीडर (गाने में अगुआई करने वाला) गाने की घोषणा करता और भवन के अन्दर बैठे लोगों के साथ गाना आरम्भ कर देता। फिर बाहर वाले लोग अन्दर आ जाते और आराधना के लिए अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाते।

''उनके गीत गाने'' के अलावा इस तथ्य के साथ कि वचन सुनाने में आराधना का अधिकतर समय लग जाता था, यह अवधारणा बन गई कि सच्ची आराधना के लिए गाना और ''आरम्भिक प्रार्थना'' आवश्यक है। इस अवधारणा को कई बार प्रचारकों द्वारा अनजाने में बढ़ावा दिया जाता है। रॉबर्ट वैबर ने एक मेहमान प्रचारक के बारे में बताया जिसे उस कलीसिया में प्रचार करना था जहां रॉबर्ट सेवा करते थे। यह मेहमान प्रचारक आराधना से पहले उनके पास आकर कहने लगा, ''गीत और प्रार्थना जल्दी-जल्दी कर लेना। मुझे आज बहुत कुछ कहना है।''[1] यह प्रार्थना और गाने को आराधना की छोटी अभिव्यक्तियां बना देता है, जो आराधना का परिचय देने के लिए ही हों।

हमें इन कथित ''तैयारियों'' को निकालना नहीं चाहिए; बल्कि आराधना में उनके महत्व पर ज़ोर देने के लिए *हमें उन्हें सामने लाना* चाहिए। मुझे नहीं लगता कि बेड़ियों में जकड़े पांव के साथ पौलुस और सीलास फिलिप्पी जेल की काल-कोठरी में प्रार्थना और भजन गाते हुए केवल तैयारी कर रहे थे (प्रेरितों 16:23-25)। वे आराधना कर रहे थे! जैसा कि हमने पिछले पाठों में देखा, परमेश्वर अपनी सामर्थ अद्भुत ढंगों से दिखाता है, जब लोग उसकी आराधना कर रहे होते हैं।

गाने में आराधना करना

परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा में गाना कम से कम हमें निर्गमन 15 अध्याय तक पीछे ले जाता है। मूसा ने मिस्र की दासता से छूटने के जश्न को मनाने के लिए गीत में लोगों की अगुआई की थी। पूरे गीत में, परमेश्वर को उसकी शान, सामर्थ और श्रेष्ठता के लिए सराहा गया और उसका गुणगान किया गया। आयत को लय में लाने से इसके शब्द याद रखने की क्षमता बढ़ जाती है। उस समय यह और भी आवश्यक था जब शब्दों को लोगों के जीवन की महत्वपूर्ण घटना में याद रखना होता था। इन गीतों को याद किया जाना था और अगली पीढ़ी को दिया जाना था। हर अगली पीढ़ी ने फिर परमेश्वर की श्रेष्ठता के लिए उसकी स्तुति करनी थी।

गिनती 21:17, 18 में जल के परमेश्वर के दान को याद रखने के लिए एक छोटा सा गीत

है। इस बार यह जल चट्टान में से नहीं बल्कि कुएं में से मिला था। न्यायियों 5 अध्याय इस्राएल को कनान के राजा येबिन से छुटकारा दिलाने के लिए परमेश्वर का गुणगान करते हुए पूरी तरह से दिबोरा और बाराक के गीत को दिया गया है। हमें नहीं मालूम कि अगली पीढ़ियों में इसका इस्तेमाल कैसे हुआ, लेकिन उन्होंने एक बात सुनिश्चित कर दी कि परमेश्वर के लोग आराधना के माध्यम के रूप में गीत का इस्तेमाल सदियों पहले करते थे। राजा दाऊद ने आराधना में गाने को एक नई प्राथमिकता दी। आमतौर पर भजन लय में गाने के लिए लिखे जाते थे। उनमें से कुछ गीतों में विशेषकर परमेश्वर की स्तुति गाने का उल्लेख है (भजन संहिता 30:4; 95:1; 96:1, 4; 98:1; 147:7; 149:1)। दाऊद के भजनों का इस्तेमाल आमतौर पर मन्दिर की आराधना के साथ-साथ आराधनालय की आराधना में भी किया जाता था।

मसीहियत गाने का धर्म भी है। प्रभु भोज की स्थापना के बाद यीशु और उसके चेलों ने भजन गाया (मत्ती 26:30)। कुरिन्थुस की कलीसिया को पौलुस के निर्देश से पता चलता है कि आरम्भिक कलीसिया आराधना सभा में इकट्ठी होती थी (1 कुरिन्थियों 14:15; देखें आयत 26)। गाने का इस्तेमाल गहरी पीड़ा से अत्यधिक आनन्द की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए संसार के हर भाग में किया जाता है। आराधना में हम जो भी करते हैं, उनमें से किसी भी बात से परमेश्वर के प्रति प्रेम, धन्यवाद, आनन्द या पाप के लिए पश्चाताप तक को व्यक्त नहीं किया जा सकता। गाना आत्मा को ऊपर उठाकर पूरी कलीसिया को समझाता है। जैक हेफर्ड का अवलोकन है, ''गाने के बिना आराधना हो सकती है, परन्तु इसकी सुन्दरता, प्रतिष्ठा या शान या इसकी कोमलता और घनिष्ठता में इससे बढ़कर किसी का योगदान नहीं है।''[2]

केवल गा कर

बिना किसी संदेह के, आरम्भिक कलीसिया ने पुराने नियम की इब्रानी आराधना में से विशेषकर आराधनालय की आराधना में से काफी कुछ लिया था। भजन संहिता से उन्होंने काफ़ी गीत लिए।[3] परन्तु पुराने नियम की आराधना और पहली सदी की कलीसिया की आराधना में बड़ा अन्तर *विशुद्ध* गाने का निकलना है। मन्दिर में होने वाली आराधना में विभिन्न प्रकार के साजों के साथ चुनिंदा लेवियों का कोरस होता था (1 इतिहास 15:16; 23:5; 25:6, 7)। भजन संहिता में कई जगह साजों की बात की गई है (भजन संहिता 33:2; 43:4; 49:4; 71:22; 92:3; 98:5; 147:7; 149:3; 150:3-5)।

परमेश्वर ने पुराने नियम की आराधना में साजों के इस्तेमाल को स्वीकृति दी थी, परन्तु आरम्भिक मसीही अपनी सभाओं में इनका इस्तेमाल नहीं करते थे। नये नियम की कलीसिया की आराधना में स्पष्ट तौर पर गाने के साथ साजों की अनुपस्थिति मिलती है। उदाहरण के लिए इतिहासकारों ने प्राचीन दस्तावेजों से कोई संकेत खोजा है कि आरम्भिक कलीसिया साजों का इस्तेमाल क्यों नहीं करती थी। बेशक कलीसिया के इतिहासकारों में आज भी इसका कारण स्पष्ट नहीं है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे साजों का इस्तेमाल नहीं किया जाता था। ऑब्रे जॉनसन ने लिखा है, ''चेलों को हर प्रकार के साजों का ज्ञान था, और उनके इस्तेमाल के लिए ऐतिहासिक उदाहरण भी, तौ भी आरम्भिक मसीही बिना किसी प्रकार के मशीनी साज के अपने प्रभु की स्तुति गाते थे। यह परिवर्तन जानबूझकर किया गया और नाटकीय था।''[4]

इस तथ्य का कि परमेश्वर ने पुराने नियम की आराधना में किसी बात की अनुमति दी थी, अर्थ आवश्यक नहीं कि यह भी हो कि नये नियम की कलीसिया में भी उसकी अनुमति है। उसने होमबलियों, धूप जलाने और अनेक प्रकार के बलिदानों की अनुमति भी दी थी; परन्तु मसीही लोगों ने अपनी आराधना में इनको जारी नहीं रखा। मेरे विचार से यह कहना सही होगा कि आज अधिकतर धार्मिक अगुओं को आरम्भिक कलीसिया की आराधना को बहाल करने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। बेशक, हमारे लिए यह पता लगाना कि आरम्भिक कलीसिया क्या करती थी और फिर वैसे ही करने की इच्छा हो सकती है। इसलिए यह पूछना उपयुक्त ही है, "अपनी सावर्जनिक सभाओं में वे जो कुछ करते थे वह क्यों करते थे?" नये नियम को उन आरम्भिक कलीसियाओं की अगुआई के लिए नहीं लिखा गया था, क्योंकि उनकी बाइबल तो पुराना नियम थी। तौ भी उन्होंने इस बात को महसूस किया कि यीशु ने आराधना का एक नया युग आरम्भ किया है (यूहन्ना 4:23, 24)। उन्हें मालूम था कि परमेश्वर अब यरूशलेम के ईंट-पत्थरों के मन्दिर में नहीं रहता (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। आरम्भिक मसीही सभाओं की आराधना में पुराने नियम और आराधनालय की कुछ परम्पराओं को ग्रहण किया गया, तौ भी हम इस निष्कर्ष को निकाल नहीं सकते कि उन्होंने आराधना के लिए निर्देश प्रेरितों से पाया था। परमेश्वर की प्रेरणा पाए इन लोगों को मिला संदेश पवित्र आत्मा की ओर से था और आश्चर्यकर्मों के चिह्नों से इनकी पुष्टि हुई।

एक तथ्य जो पहली सदी के मसीही लोगों के बारे में हमें पता है वह यह है कि वे परमेश्वर के ढंग के अनुसार काम करने को समर्पित थे (प्रेरितों 2:42; 4:19, 20; 5:29)। जो कुछ उन्होंने किया वह परेमश्वर से मिली प्रेरितों की शिक्षा के कारण किया होगा (मत्ती 16:17ख; 1 कुरिन्थियों 2:9-11)। नया नियम आत्मा की प्रेरणा पाए उन्हीं लोगों द्वारा लिखा गया था, जिन्होंने आरम्भिक मसीही लोगों को सिखाया। प्रेरितों को आराधना का असली मकसद पता था, और आराधना के लिए परमेश्वर की पसन्दीदा शिक्षा से उन्होंने आरम्भिक कलीसिया को तैयार किया। हम आसानी से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यदि परमेश्वर कलीसिया से आराधना में साजों के इस्तेमाल का इच्छुक होता तो वह प्रेरितों को इसका निर्देश दे सकता था, परन्तु उसने नहीं दिया। यह समझ आ जाने पर कि आराधना क्या है और यह कि परमेश्वर हम से क्या करवाना चाहता है हमें यह समझ आ जाता है कि गाने के साज इस प्रक्रिया में योगदान नहीं देते। वास्तव में साजों से आराधना का ध्यान परमेश्वर से संगीत के प्रदर्शन की ओर चला जाता है। मैं एवरेट फर्ग्यूसन के साथ सहमत हूं:

> मसीही आराधना के आत्मिक स्वभाव के साथ गाने में साजों के इस्तेमाल के मेल खाने का एक वास्तविक प्रश्न है। मशीनी कार्य के रूप में वाद्य संगीत निकालना आत्मिक आराधना करने से यानी उस से जो मनुष्य के आत्मिक स्वभाव से निकलती है, अलग है। यहां मसीही लोगों को अपनी सोच की अगुआई करने के लिए अधीन प्राथमिकताओं को अनुमति नहीं देनी चाहिए, बल्कि आराधना की अपनी थियोलॉजी को आराधना के स्वभाव के बारे में नये नियम के वाक्यों में से निकलने देना चाहिए।[5]

आराधना से भरे गीत आत्मा और मन दोनों पर छा जाने थे (1 कुरिन्थियों 14:15)। चाहे यह स्पष्ट नहीं है कि नीचे दी गई आयतें विशेषकर आराधना सभा को ध्यान में रखकर लिखी गई या नहीं, परन्तु मसीही गानों के उद्देश्य के बारे में जो कुछ इनसे पता चलता है वह सभा सहित व्यापक

प्रासंगिकता वाला है।

> और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो (इफिसियों 5:18, 19)।

> मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ (कुलुस्सियों 3:16)।

इन दोनों वचनों से पता चलता है कि मसीही गाना परमेश्वर के प्रति मन की इच्छा को व्यक्त करता है। गाना हमारे मन की बात को दिखाना भी होना चाहिए। गाने के साथ साज बजाना निजी तौर पर सुकून देने वाला हो सकता है, परन्तु आराधना का उद्देश्य यह नहीं है। गाने के और स्पष्ट उद्देश्य एक दूसरे को सिखाना और चिताना हैं। गाने के साज यह काम नहीं कर सकते।

अन्त में ये दोनों हवाले गीतों की तीन किस्मों का उल्लेख करते हैं, जो परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करती है। ''भजन'' शब्द का इस्तेमाल पुराने नियम की भजन संहिता की पुस्तक में से गीत गाने के लिए है। ''स्तुतिगान'' परमेश्वर की स्तुति और महिमा या प्रभु के गीतों को कहा गया है।[6] ''आत्मिक गीत'' सभा के निजी सदस्यों द्वारा तैयार किए गए गीतों के लिए सामान्य शब्द है, जिनमें आत्मिक संदेश होता है। हेफर्ड के अनुसार आरम्भिक कलीसिया के लिए ये गीत विशेष थे, क्योंकि इन्हें आत्मा की अगुआई से चलने वाले लोगों द्वारा लिखा गया था।[7] हर तरह के गीत में शब्द ही होते हैं, जिनसे उद्देश्य पूरा होता है न कि उनका सुर। सुर हमें उन शब्दों को याद करने में सहायता करता है, परन्तु परमेश्वर और एक-दूसरे के लिए संदेश शब्दों से ही दिया जाता है। साजों से ऐसा सुर नहीं निकलता, जो इससे अधिक यादगारी हो। न ही यह शब्दों में पाए जाने वाले संदेश देता है। इस्राएल को परमेश्वर की ओर लौटने के लिए कहते हुए होशे ने उनसे आग्रह किया, ''बातें सीखकर और यहोवा की ओर फिरकर, ... तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएंगे'' (होशे 14:2)। परमेश्वर हमारे होंठों का फल चाहता है!

इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि नये नियम की कलीसिया में ए कैपेला संगीत का इस्तेमाल किया जाता था। ''ए कैपेला'' शब्द *a* जिसका अर्थ ''के ढंग में'' और *cappella* जिसका अर्थ ''चैपल'' है, लातीनी शब्दों से लिया गया है। इस प्रकार मूल रूप में इस शब्द का अर्थ ''चैपल, के ढंग, या के अनुसार'' था। इस शब्द का इस्तेमाल बिना किसी सहायता के गाने के लिए संकेत देता है कि चैपल या कलीसिया का संगीत मूल में बिना साजों के था।

मण्डली के रूप में गा कर

न केवल आरम्भिक कलीसिया गाने के साजों का इस्तेमाल नहीं करती थी, बल्कि इन मसीही लोगों ने लेवियों द्वारा कोरस गाए जाने की परम्परा को भी छोड़ दिया। ऊपर दी गई सब आयतों का अर्थ यही है कि गाने में सारी मण्डली भाग लेती थी। गाना आराधना की वह अभिव्यक्ति है, जिसमें पूरी मण्डली एक समान भाग ले सकती है। प्रार्थना में सभा की अगुआई एक

व्यक्ति करता है। एक जन करता है। चाहे हम मिलकर या किसी के पीछे वचन पढ़ सकते हैं, पर आमतौर पर वचन एक ही व्यक्ति पढ़ता है। "गाने की सर्वव्यापकता से लग सकता है कि यह सांसारिक या बेकार अनुभव है, पर वही विश्वव्यापकता गा रही मण्डली के बीच संगति को सम्भव बनाती है जो कि आराधना के किसी अन्य माध्यम से नहीं हो सकती।"[8] गाने का इस्तेमाल ऐसे आदान-प्रदान में किया जाना था, जिससे पूरी मण्डली में सुधार हो और उसमें एकता आए।

एंडी. टी. रिची ने कलीसिया के संगीत ने "संगीत सभा करने" की समस्या से ठीक ही जोड़ा है।[9] सभा को रिझाने के लिए सुनाने के लिए पेशेवर संगीतकारों द्वारा किए जाने वाले संगीत कार्यक्रम उसके जो आराधना के लिए परमेश्वर ने बनाया था, विपरीत हैं। आराधना की कोई भी गतिविधि जो लोगों या उनके अभिनय की ओर ध्यान आकर्षित करती है, आराधना की आशीष का दुरुपयोग है। हर आराधना परमेश्वर की ओर ध्यान लगाने और सब मनों और हृदयों को उसकी ओर लाने के लिए होनी चाहिए। आराधना लोगों के लिए है। सभा के हर सदस्य को आराधना की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक है।

प्रार्थना के द्वारा आराधना करना

प्रार्थना को आराधना की तैयारी कभी नहीं मानना चाहिए। सार्वजनिक सभा हो या व्यक्तिगत आराधना, प्रार्थना परमेश्वर के साथ संगति की सबसे निकटतम विधियों में से एक है। आरम्भिक कलीसिया प्रार्थना करने वाली कलीसिया थी। नये नियम में आरम्भिक मसीही लोगों की कई प्रार्थनाओं के साथ-साथ प्रार्थना के विषय में निर्देश दिए गए हैं। प्रार्थना एक सबसे जबर्दस्त हथियार है, जो परमेश्वर ने केवल अपने लोगों को दिया है, किसी और को नहीं। "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है" (याकूब 5:16ख)।

प्रार्थना की सबसे आसान परिभाषा "परमेश्वर से बातें करना" है। परन्तु यह परमेश्वर से एक विशेष प्रकार से बातें करना है। प्रार्थना केवल एक पात्री होने से कहीं अधिक है। एक पूर्ण अर्थ में प्रार्थना *परमेश्वर के साथ सहभागिता* है। किंग जेम्स वर्जन में उत्पत्ति 18 में परमेश्वर के साथ अब्राहम की बातचीत को "बातें" करना कहा गया है (उत्पत्ति 18:33)। सीनै पर्वत पर परमेश्वर के साथ अब्राहम की बातचीत को "बातें" ही कहा गया है (निर्गमन 31:18; KJV)। यीशु कई बार पूरी-पूरी रात प्रार्थना में अपने पिता से बातें करने के लिए किसी एकान्त पहाड़ पर अकेला चला जाता था (मत्ती 14:23; मरकुस 6:46; लूका 6:12)।

लोग आमतौर पर प्रार्थना को केवल वह तरीका मानते हैं जिस के द्वारा हम परमेश्वर से कुछ मांगते हैं। यह वही है, परन्तु उससे कहीं अधिक है। यीशु के चेलों में से एक ने उसे प्रार्थना करते हुए देखने के बाद उससे कहा था, "हे प्रभु, जैसा यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे" (लूका 11:1ख)। उत्तर में यीशु ने उन्हें अपनी खुद की प्रार्थनाएं बनाने के लिए एक नमूने का पालन करने के लिए दिया (मत्ती 6:9-13 भी देखें)। उसके नमूने का आरम्भ परमेश्वर के नाम को महिमा और आदर देने से हुआ। "तेरा नाम पवित्र माना जाए" परमेश्वर के लिए भक्ति और आदर पर ज़ोर देता है। होमेर हेली ने कहा है:

> परमेश्वर का नाम उस सबको जो वह है यानी उसके अस्तित्व, परमेश्वरत्व, सामर्थ,

> महिमा और तेज को दर्शाता है। कोई भी जो परमेश्वर की भक्ति को ध्यान में रखते हुए उसके नाम को लेकर, उसे सम्बोधित करता है, उसे उसको सब गुणों में भरपूर और सर्वोत्तम के रूप में मानना और पहचानना आवश्यक है।[10]

बाइबल में दर्ज कई प्रार्थनाएं इसी नमूने पर आधारित हैं। नहेम्याह ने परमेश्वर को ''स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, महान और भययोग्य ईश्वर! तू जो अपने प्रेम रखने वाले और आज्ञा मानने वाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता है'' (नहेम्याह 1:5) कहकर सम्बोधित किया। एज्रा की प्रसिद्ध प्रार्थना में (एज्रा 9:6-15), परमेश्वर के अनुग्रह (आयत 8), वफादारी (आयतें 9, 13) और धार्मिकता (आयत 15) का संकेत मिलता है। एज्रा और नहेम्याह दोनों की प्रार्थनाओं में दूसरों के लिए सिफारिशी प्रार्थनाओं के साथ-साथ अंगीकार भी था। नहेम्याह ने अपने लिए केवल एक चीज़ मांगी कि उसके आने पर राजा उसके साथ नरमी से पेश आए (नहेम्याह 1:11)।

इफिसियों 3:14-21 में पौलुस की प्रार्थना में परमेश्वर की सामर्थ और शक्ति को माना गया (आयतें 20, 21)। प्रेरित इफिसुस के मसीही लोगों से आत्मिक सामर्थ, प्रेम और समझ पाने और परमेश्वर से परिपूर्ण होने की विनती भी कर रहा था। प्रार्थना केवल मांगना नहीं है। जिम्मी जिविडन ने प्रार्थना को ''परमेश्वर की महिमा व्यक्त करने, याचनाएं और पाश्चाताप की इच्छा से उठने वाला आराधना का कार्य'' कहा।[11] उसने लिखा:

> ध्यान परमेश्वर की महिमा करने और अपने और दूसरों के लिए याचनाएं करने पर है। हम भय से खड़े होते हैं कि परमेश्वर जो हमारे सिर के बालों को भी गिन लेता है, और जिसे गिरने वाली हर चिड़िया का पता होता है, हमारी प्रार्थओं को सुनता और उनका उत्तर देता है।[12]

परमेश्वर से मांगी जाने वाली कुछ आशिषें उसकी सामर्थ को मान लेना है, क्योंकि उन पर उसकी सामर्थ के बिना वे मिल नहीं सकतीं। प्रार्थना के बारे में एक ज़बर्दस्त बात यहोशू की पुस्तक में मिलती है। यहोशू ने परमेश्वर से कहा कि अपने शत्रुओं को पूरी तरह से पराजित करने के लिए इस्राएल को प्रकाश देने के लिए सूरज को रोक दे। परमेश्वर ने यहोशू की विनती को सुनकर उसका उत्तर दिया। वचन कहता है, ''न तो उससे पहिले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद, जिस में यहोवा ने किसी पुरुष की सुनी हो; क्योंकि यहोवा तो इस्राएल की ओर से लड़ता था'' (यहोशू 10:14)।

प्रार्थना वह सामर्थ देती है जो केवल धर्मी व्यक्ति को ही मिलती है। प्रार्थना करना आराधना करना ही है यानी सर्वशक्तिमान के सामने याचना करने का कार्य ही उसके सर्वसामर्थी होने को मान लेना है। ''हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है'' (1 यूहन्ना 5:14)।

हमें हर बात के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा गया है (फिलिप्पियों 4:6)। प्रार्थना धन्यवाद या आवश्यकता के समय किसी के लिए सिफारिश की अभिव्यक्तियां हो सकती है (1 तीमुथियुस 2:1, 2)। आत्मिक तौर पर हो या शारीरिक रूप में प्रार्थना क्षमा के लिए या किसी बीमार के लिए हो सकती है (याकूब 5:13, 14, 16; 1 यूहन्ना 5:16)। जब हमारी तड़प इतनी

अधिक होती है कि हम उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते तो पवित्र आत्मा हमारे मन की इच्छा परमेश्वर को बताने में हमारी सहायता करता है।

> इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है। और मनों का जांचने वाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है ? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है (रोमियों 8:26, 27)।

सारांश

परमेश्वर हमारी आराधना की इतनी इच्छा करता है कि उसने हमें उसकी भयदायक उपस्थिति में आने के लिए प्रार्थना और स्तुति के लाभ दिए हैं। उसकी उपस्थिति में होने की अनुमति का केवल विचार ही दीन करने वाला है। न केवल हमें उसके सामने जाने की अनुमति मिलती है बल्कि हमें आराधना में उसके सिंहासन के पास पहुंचने का निमन्त्रण भी दिया जाता है। हमारे लिए स्तुति और धन्यवाद व्यक्त करने के लिए दो ढंग गीत गाना और प्रार्थना करना है। गीत प्रार्थना भरे भी हो सकते हैं। भजनों की हमारी पुस्तकों में कई गीत प्रार्थना के गीत हैं। न तो गाना और न प्रार्थना आराधना की तैयारी के लिए हैं; बल्कि जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें बनाया है, दोनों अपने आप में आराधना हैं। जेम्स पी. गिलस ने सुझाव दिया है कि प्रार्थना आराधना की धड़कन है।[13]

आराधना के इन रूपों को सार्वजनिक सभा में प्रार्थनाओं और गीतों तक सीमित नहीं करना चाहिए। हमें "लगातार प्रार्थना करते" रहने के लिए कहा गया है (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। इसी तरह हमें अपने मनों और अपने होंठों पर आत्मिक गीतों के साथ जीवन में से गुजरना चाहिए। वे हमें परमेश्वर के निकट रखने और शैतान से उचित दूरी बनाए रखने में सहायक होंगे। "जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है" (मत्ती 26:41)।

टिप्पणियां

[1]राबर्ट ई. वैबर, *वरशिप इज़ ए वर्ब: एट प्रिंसिपल्स फ़ार ट्रांसफारमिंग वरशिप* (पीबॉडी, मेसाचुएट्स: हेंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1999), 43. [2]जैक हेडफर्ड, *वरशिप हिज़ मेजस्टी* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1987), 144. [3]वही, 147. [4]ऑबरी जॉनसन, *म्यूज़िक मैटर्स इन द लार्ड'स चर्च* (नैशविल्ले: टवंट्यिथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1995), 31. [5]एवरेट फर्ग्यूसन, *ए कैपेला म्यूज़िक इन द पब्लिक वरशिप ऑफ़ द चर्च* (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रेस, 1972), 88. [6]हेफर्ड, 149. [7]वही, 150. [8]एंडी टी. रिची जूनि, *दाउ शैल्ट वरशिप द लॉर्ड दाई गॉड* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1969), 114. [9]वही, 113. [10]होमेर हेली, *प्रेअर एण्ड प्रोविडेंस* (लुइसविल्ले, केंटकी: रिलिजियस सप्लाई, 1993), 18.

[11]जिम्मी जिविडन, *मोर दैन ए फीलिंग: वरशिप दैट प्लीज़स गॉड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1999), 51. [12]वही। [13]जेम्स पी. गिलस, *ए हार्ट ए अफ्लेम: द डायनामिक्स ऑफ़* वरशिप (टरपन स्प्रिंग्स, फ्लोरिडा: तिथि नहीं), 79.